UPSC Daily Current Affairs 23 Jun 2021

1. एक हवाई जाल की राजनीति

(विषय- सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र II- IR, स्रोत- द हिंदू)

खबरों में क्यों है?

- हाल में, रायनएयर उड़ान को बेलारूस के एक मिग-29 लड़ाकू जेट द्वारा मिंस्क में एक आपातकालीन लैंडिंग करने के मजबूर कर दिया गया।
- यह ग्रीस से लिथुआनिया जा रहा था।
- असंतुष्ट बेलारूस की पत्रकार, रोमन प्रोटासेविच, जो व्यावसायिक, नागरिक हवाई जहाज में यात्रा कर रहे थे, को बाद में गिरफ्तार कर लिया गया।
- पूरा ऑपरेशन, जैसा कि आरोप है, राष्ट्रपति एलेक्जेंडर लुकाशेंको के आदेश पर किया गया जो पिछले 27 वर्षों से बेलारूस पर शासन कर रहे हैं।

वैश्विक प्रतिक्रिया

- यूरोपीय संघ (EU) और US ने इसकी निंदा की और अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन संगठन (ICAO) द्वारा गहन जांच की मांग की।
- EU- आधारित वाहक ने इस बात का ध्यान रखते हुए जिससे बेलारूस के ऊपर की उड़ान से बचा जा सके। बेलारूस की उड़ानों को EU वायुक्षेत्र अथवा उसके हवाई अड्डे में लैंडिंग करने से प्रतिबंधित कर दिया गया है।
- एयर फ्रांस, ब्रिटिश एयरवेज़, लुफ्तहांसा, KLM और कई अन्य एयरलाइनें ने अपने स्थगन का क्रियान्वयन कर दिया है।
- US, EU और UK ने बेलारूस के ऊपर और भी प्रतिबंध लगा दिये हैं।

उड्डयन पर अंतरराष्ट्रीय कानून

अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन पर संधि

- अंतरराष्ट्रीय नागरिक उड्डयन पर संधि, जिसे बेहतर तरीके से 1944 का शिकागो संधि कहा जाता है, जिसपर बेलारूस हस्ताक्षर करने वाला देश है, किसी नागरिक हवाई जहाज के खिलाफ गैरकानूनी हस्तक्षेप को निषिद्ध करता है।

शिकागो संधि का अनुच्छेद 9

- एक ही समय में, अनुच्छेद 9 के अंतर्गत इसमें कई प्रावधान हैं जो किसी संप्रभु देश को प्रतिबंध लगाने का अधिकार प्रदान करता है जिसमें उसके क्षेत्र में किसी निर्दिष्ट हवाई अड्डे पर जबर्दस्ती

लैंडिंग कराना शामिल है। यह असाधारण परिस्थितियों में अथवा आपातकाल के दौरान, अथवा सार्वजनिक सुरक्षा के हित में किया जा सकता है।

- एक बार यदि उड़ान लैंड कर गई, तो **अनुच्छेद 16** अतिथि देश को यह अधिकार देता है कि वह हवाई जहाज को बोर्ड कर सके अथवा उसकी जांच-पड़ताल कर सके।
- शिकागो संधि केवल संविदा वाले पक्षों के नागरिक हवाई जहाज पर ही लागू होती है।
- **राष्ट्रीय वाहक, बेलाविया बेलारूसियन एयरलाइंस इस मामले में शामिल नहीं है, यद्यपि यह** EU **द्वारा लक्षित प्रतिबंधों का हिस्सा है।**

अंतरराष्ट्रीय वायु सेवा पारगमन समझौता (IASTA)

- इसे 1944 में शिकागो में सम्पन्न किया गया था।
- इस समझौते के अनुसार, संविदा वाले देश अनुसूचित अंतरराष्ट्रीय वायु सेवा के संदर्भ में एक दूसरे को वायु पारगमन की स्वतंत्रता प्रदान करते हैं, अर्थात, बिना लैंडिंग किये देश के आर-पार उड़ने का विशेषाधिकार।

बेलारूस IASTA का हस्ताक्षरकर्ता नहीं है।

बेलारूस के बारे में जानकारी

- **यह पूर्वी यूरोप का एक देश है।**
- 1991 में स्वतंत्र होने के पहले तक, बेलारूस, को बेलोरसिया अथवा व्हाइट रसिया कहा जाता था।
- यह तीनों स्लाविक गणराज्यों में सबसे छोटा था जो सोवियत संघ में शामिल था (अन्य दो बड़े गणराज्य रूस और यूक्रेन थे)।

2. कुपोषण पर अध्ययन के लिए सदन का पैनल

(विषय- सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र II- स्वास्थ्य, स्रोत- द हिंदू)

खबरों में क्यों है?

- हाल में, एक संसदीय पैनल ने महिला और बाल विकास मंत्रालय से महामारी के आंगनवाड़ी सेवाओं और बच्चों के मध्य कुपोषण स्तरों पर पड़े प्रभाव पर एक सर्वेक्षण करने के लिए कहा है।

खबरों में और भी है

- ऐसा सुना गया है कि शिक्षा, महिला, बच्चों, युवा और खेलकूद पर स्थाई समिति ने मंत्रालय के अधिकारियों से महामारी के दौरान जमीनी स्तर पर कैसे आंगनवाड़ी सेवाओं को प्रदान किया गया इसको समझने के लिए आंकड़ों की जरूरत पर पूछताछ की। साथ ही बौनेपन और अपक्षय पर कोविड-19 के प्रभाव के आकलन पर भी पूछताछ की।
- सरकार ने **पोषण ट्रैकर** नामक एक ऐप की शुरुआत की है जिससे 14 लाख आंगनवाड़ियों की सेवाओं की डिलीवरी की निगरानी की जा सके।
- इस आंकड़े को 1 जून से अपलोड किया जाना शुरू किया गया है।

पोषण ट्रैकर ऐप के बारे में जानकारी

- इसे MoWCD द्वारा विकसित किया गया है।
- यह ऐप सभी आंगनवाड़ी केंद्रों (AWC), आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं (AWWs) और लाभकर्ताओं की वास्तविक समय निगरानी उपलब्ध कराएगा।

महत्व

- यह ऐप गर्भवती महिलाओं, दूध पिलाने वाली मांओं, बच्चों, किशोर बालिकाओं और किशोर बालकों के लिए AWC, AWWs और संपूर्ण लाभकर्ता प्रबंधन की गतिविधियों का 360 डिग्री दृश्य उपलब्ध कराएगा।

संबंधित सूचना

आंगनवाड़ी योजना के बारे में जानकारी

- यह एक केंद्र प्रायोजित योजना है जिसे राज्य/केंद्र शासित क्षेत्र क्रियान्वित कर रहे हैं जो भारत में ग्रामीण बाल और मातृत्व देखभाल केंद्र के रूप में कार्य करता है।
- इस भारत सरकार ने 1975 में शुरू किया था जो बाल भुखमरी और कुपोषण को निपटने के लिए एकीकृत बाल विकास सेवाओं का हिस्सा है।

भारत और कुपोषण

वैश्विक पोषण रिपोर्ट-2020

- वैश्विक पोषण रिपोर्ट 2020 के अनुसार, भारत 88 देशों में शामिल है जिसके 2025 वैश्विक पोषण लक्ष्य पूरा न करने की आशंका है।

भारत में कुपोषित बच्चे

- भारत में कुपोषण पांच वर्ष से कम आयु की 68% मौतों का कारण है और कुल अशक्तता-समायोजित जीवन वर्षों के 17% का कारण है।
- भारत में दुनिया के लगभग 30% बौने बच्चे हैं और साथ ही पांच वर्ष से कम आयु के बुरी तरह से अपक्षय के शिकार 50 प्रतिशत बच्चे हैं।

खाद्य और कृषि संगठन के अनुमान

- खाद्य एवं कृषि संगठन (FAO) के अनुमानों के अनुसार भारत में 194.4 मिलियन लोग कुपोषित हैं (कुल जनसंख्या का लगभग 14.5%)।

वैश्विक भुखमरी सूचकांक 2020

- भारत वैश्विक भुखमरी सूचकांक (GHI) में कुल 107 देशों में 94वें स्थान पर है।

सरकार द्वारा किए गए उपाय

पोषण अभियान

- भारत सरकार ने 2022 तक कुपोषण मुक्त भारत को सुनिश्चित करने के लिए राष्ट्रीय पोषण अभियान (NNM) अथवा पोषण अभियान की शुरुआत की है।

रक्त अल्पता मुक्त भारत अभियान

- इसे 2018 में शुरू किया गया था।
- इस अभियान का लक्ष्य रक्त अल्पता की गिरावट की वार्षिक दर में एक से तीन प्रतिशत बिंदु की वृद्धि करना है।

मध्यान्ह भोजन (MDM) योजना

- इसका लक्ष्य स्कूली बच्चों के बीच में पोषणीय स्तरों में सुधार करना है जिसका सीधा और सकारात्मक प्रभाव विद्यालयों में नामांकन, धारणाशक्ति और उपस्थित पर भी है।

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा कानून (NFSA), 2013

- इसका लक्ष्य इसकी सहयोगी योजनाओं और कार्यक्रमों के द्वारा सबसे कमजोर लोगों के लिए खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करना है।

प्रधानमंत्री मातृ वंदना योजना (PMMVY)

- इस योजना में, प्रसव के लिए बेहतर सुविधाएं हासिल करने के लिए गर्भवती महिलाओं के बैंक खातों में सीधे रु. 6,000 हस्तांतरित किया जाता है।

एकीकृत बाल विकास सेवा (ICDS) योजना

- इसकी शुरुआत 1975 में की गई थी।
- इस योजना का लक्ष्य 6 वर्ष से कम आयु के बच्चों और उनकी मांओं को भोजन, विद्यालय पूर्व शिक्षा, प्राथमिक स्वास्थ्य देखभाल, टीकाकरण, स्वास्थ्य जांच और परामर्श सेवाएं उपलब्ध कराना है।

3. ओडिशा सभी तीन मगरमच्छों की प्रजातियों वाले एकमात्र राज्य के रूप में उभरा

(विषय- सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र III- पर्यावरण, स्रोत- द हिंदू)

खबरों में क्यों है?

- ओडिशा हाल में एकमात्र राज्य के रूप में उभरा है जहां सरीसृप की तीनों प्रजातियां ताजाजल घड़ियाल, मगर और लवणजल मगरमच्छ हैं।

ये प्रजातियां हैं

a. घड़ियाल महानदी के साताकोसिया में हैं
b. मगर भिटार कनिका राष्ट्रीय पार्क में हैं
c. लवणजल मगरमच्छ

संबंधित सूचना

भारत में मगरमच्छों की प्रजातियां

a. **मगर अथवा दलदली मगरमच्छ**

आवास

- यह मुख्य रूप से भारतीय उपमहाद्वीप तक ही सीमित है जहां पर ये ताजाजल आवास प्रकारों की संख्या में पाया जाता है जिसमें नदियां, झीलें और दलदल शामिल हैं।
- लेकिन, ये तटीय लवणजल खाड़ियों और मुहानों में भी पाए जा सकते हैं।

संरक्षण की स्थिति

- संकटग्रस्त प्रजातियों की IUCN सूची: कमजोर
- CITES : परिशिष्ट I
- इन्हें वन्यजीवन (संरक्षण) कानून, 1972 की अनुसूची 1 में अधिसूचित किया गया है।
- यह भूटान और म्यांमार में पहले से ही लुप्त हो चुके हैं।

b. नदी के मुहाने वाले अथवा लवणजल मगरमच्छ

- इसे पृथ्वी की सबसे बड़ी जीवित मगरमच्छ प्रजाति माना जाता है।

आवास

- यह ओडिशा के भिटारकनिका राष्ट्रीय पार्क, पश्चिम बंगाल में सुंदरबन और अंडमान और निकोबार द्वीपसमूह में पाया जाता है।
- यह पूरे दक्षिणपूर्व एशिया और उत्तरी ऑस्ट्रेलिया में पाया जाता है।

संरक्षण की स्थिति

- संकटग्रस्त प्रजातियों की IUCN सूची: **कम चिंता वाले**
- CITES: परिशिष्ट I (ऑस्ट्रेलिया, इंडोनेशिया और पापुआ न्यू गिनी की जनसंख्याओं के अतिरिक्त, जिन्हें परिशिष्ट II में शामिल किया गया है)।
- इन्हें वन्यजीवन (संरक्षण) कानून, 1972 की अनुसूची 1 में अधिसूचित किया गया है।

c. घड़ियाल

- घड़ियाल, जिन्हें कभी-कभी गवियाल भी कहा जाता है, एक प्रकार के एशियाई मगरमच्छ हैं जिनकी विशेषता उनके लंबे, पतले थूथुन हैं जो एक पात्र से मिलते जुलते हैं (हिंदी में घड़ा)।

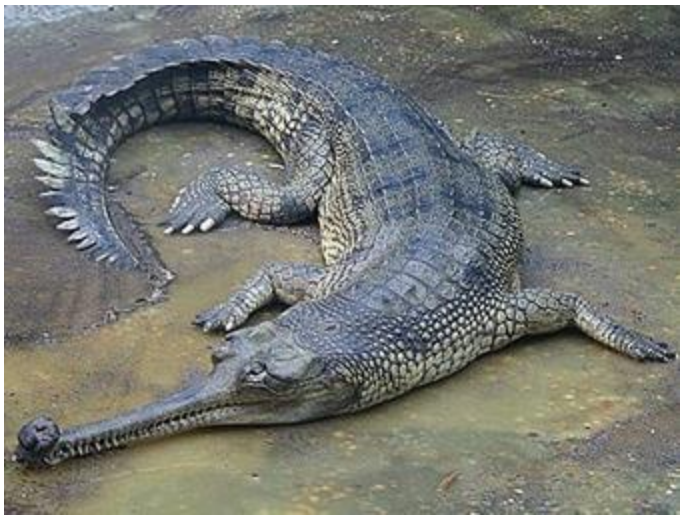

- घड़ियाल एक प्रकार के मगरमच्छ होते हैं जिसमें मगरमच्छ, एलीगेटर, केमेन इत्यादि शामिल हैं।

आवास

- घड़ियाल मुख्य रूप से हिमालियाई नदियों के ताजे जल में पाए जाते हैं।

प्राथमिक आवास

- विन्ध्य पर्वतों (मध्य प्रदेश) की उत्तरी ढलानों में चंबल नदी को घड़ियाल का प्राथमिक आवास माना जाता है।

द्वितीयक आवास

- हिमालियाई नदियां जैसे घाघरा, गंडक नदी, गिरवा नदी, रामगंगा नदी और सोन नदी घड़ियाल के द्वितीयक आवास हैं।

संरक्षण की स्थिति

- संकटग्रस्त प्रजातियों की IUCN सूची: **गंभीर रूप से संकटग्रस्त**
- CITES : परिशिष्ट I
- इसे वन्यजीवन (संरक्षण) कानून, 1972 की अनुसूची 1 में अधिसूचित किया गया है।

मगरमच्छों को संरक्षित करने के लिए सरकारी पहल

भारतीय मगरमच्छ संरक्षण परियोजना

- मगरमच्छ संरक्षण परियोजना की शुरुआत 1975 में विभिन्न राज्यों में की गई थी।
- घड़ियाल और लवणजल मगरमच्छ संरक्षण कार्यक्रम को 1975 की शुरुआत में ओडिशा में सबसे पहले क्रियान्वित किया गया था और बाद में मगर संरक्षण कार्यक्रम की शुरुआत की गई।

विश्व मगरमच्छ दिवस के बारे में जानकारी

- यह दिवस 17 जून को मनाया जाता है।
- यह दिवस वैश्विक जागरूकता अभियान है जो पूरी दुनिया में संकटग्रस्त मगरमच्छों और एलीगेटरों की स्थिति को उजागर करता है।

4. पिग्मी सुअर

(विषय- सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र III- पर्यावरण, स्रोत- द हिंदू)

खबरों में क्यों है?

- हाल में, 12 कैद में प्रजनन करने वाले पिग्मी सुअरों में से 8 को पश्चिमी असम के मानस राष्ट्रीय पार्क में छोड़ दिया गया। यह दुनिया का सबसे विरल और सबसे छोटा जंगली सुअर है।
- बाकी के चार को 25 जून को छोड़ा जाएगा।

पिग्मी सुअरों के बारे में जानकारी

- यह दुनिया का सबसे छोटा जंगली सुअर प्रजाति है।
- वे अधिकांशतः भारत में असम और पश्चिम बंगाल के उत्तरी हिस्सों में पाए जाते हैं।
- ये जानवर अपने आवास के रूप में घने घास के मैदानों का चुनाव करते हैं।

खतरा

- कृषि, मानव आवास, मवेशियां की चराई, व्यावसायिक वानिकी और घास के मैदानों को जलाना उनके अस्तित्व के लिए कुछ खतरें हैं।

संरक्षण की स्थिति

Pygmy Hog

Porcula salvania

CITATION

Meijaard, E., Narayan, G. & Deka, P. 2019. *Porcula salvania. The* 2019: e.T21172A44139115. https://dx.doi.org/10.2305/IUCN.UK.2 3.RLTS.T21172A44139115.en. Downloaded on 23 June 2021.

- इन्हें IUCN लाल सूची में **संकटग्रस्त** के रूप में अधिसूचित किया गया है।

सरकार की पहल

पिग्मी सुअर संरक्षण कार्यक्रम

- पिग्मी सुअर संरक्षण कार्यक्रम की शुरुआत 1996 में की गई।
- यह कार्यक्रम UK के डारेल वन्यजीवन संरक्षण न्यास, असम वन विभाग, प्रकृति के संरक्षण के लिए अंतरराष्ट्रीय संघ के जंगली सुअर विशेषज्ञ समूह और केंद्रीय पर्यावरण मंत्रालय के बीच में गठबंधन है।
- इसे वर्तमान में गैर सरकारी संगठनों अरण्यक और इकोसिस्टम्स इंडिया द्वारा क्रियान्वित किया जा रहा है।
- पुनः परिचय कार्यक्रम को 2008 में शुरू किया गया। इसमें सोनई-रुपई वन्यजीवन अभ्यारण्य (35 सुअर), ओरंग राष्ट्रीय पार्क (59) और बर्नाडी वन्यजीवन अभ्यारण्य (22) शामिल हैं।

5. विश्व के पहले अनुवांशिक रूप से संशोधित रबड़ पौधे को असम में लगाया गया

(विषय- सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र III- अर्थव्यवस्था+ विज्ञान एवं तकनीक, स्रोत- द हिंदू)

खबरों में क्यों है?

- हाल में, गुवाहाटी के बाहरी हिस्से पर एक रबड़ बोर्ड अनुसंधान फार्म में अब दुनिया का पहला अनुवांशिक रूप से संशोधित (GM) रबड़ पौधा है जो उत्तरपूर्व में मौसमी परिस्थितियों के लिए तैयार किया गया है।
- इस पौधे को केरल आधारित भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान (RRII) द्वारा विकसित किया गया है।

अनूठा चरित्र

- GM रबड़ में MnSOD जीन की अतिरिक्त प्रतिकृतियां हैं, अथवा मैंगनीज वाला सुपरऑक्साइड डिस्म्यूटेस है, जिसे पौधे में डाल दिया गया है।
- इस जीन से जाड़े के दौरान गंभीर ठंड की स्थितियों से बचने की संभावना है- यह एक प्रमुख कारक है जो क्षेत्र में युवा रबड़ पौधों की वृद्धि को प्रभावित करता है।

संबंधित सूचना

भारत में रबड़ का उत्पादन

- भारत दुनिया का मलेशिया, इंडोनेशिया, थाईलैंड और ब्राजील के बाद पांचवां सबसे बड़ा रबड़ उत्पादक देश है।

- यह लगभग 7 लाख टन रबड़ का उत्पादन करता है, जोकि दुनिया के कुल उत्पादन का 4 प्रतिशत है।
- केरल भारत में प्राकृतिक रबड़ का अग्रणी उत्पादक है।
- अन्य रबड़ उत्पादक राज्य तमिलनाडु, कर्नाटक और अंडमान एवं निकोबार द्वीपसमूह हैं।

1947 के रबड़ कानून के बारे में जानकारी

- इसका निर्माण प्राकृतिक रबड़ को एक रणनीतिक उत्पाद के रूप में प्रोत्साहित करने के लिए किया गया, जिससे रबड़ उद्योग का केंद्र के नियंत्रण के अंतर्गत विकास हो सके।
- इसने भारत में रबड़ उद्योग के नियंत्रण और समन्वयन के लिए रबड़े बोर्ड की स्थापना की है।
- यह बोर्ड, डीलर, विनिर्माणकर्ता इत्यादि जैसे रबड़ उद्योग से संबंधित महत्वपूर्ण शब्दों और परिभाषाओं की स्थापना करता है।

6. बढ़ते समुद्री स्तरों की वजह से लक्षद्वीप बड़े तटीय क्षय का सामना कर सकता हैः अध्ययन

(विषय- सामान्य अध्ययन प्रश्नपत्र III- पर्यावरण, स्रोत- इंडियन एक्सप्रेस)

खबरों में क्यों है?

- हाल में, IIT- खड़गपुर के वैज्ञानिकों के एक समूह ने विज्ञान और तकनीक विभाग के अंतर्गत एक अध्ययन किया और पाया कि लक्षद्वीप के चारों ओर समुद्री स्तरों के वार्षिक तौर पर 0.4 मिमी. से 0.9 मिमी. के बीच में बढ़ने की संभावना है, जिससे कई द्वीपों में तटीय क्षय होगा और शायद छोटे द्वीप डूब जाएं।

अध्ययन की प्रमुख खास बातें

- इस अध्ययन ने अनुमान लगाया है कि चेटलट और अमिनी द्वीपों के बड़े पैमाने पर भूमि खो देने की संभावना है। अनुमान नक्शांकन ने इंगित किया कि वर्तमान तटरेखा के लगभग 60-70 प्रतिशत के अमिनी में भूमि हानि की संभावना है जबकि चेटलट में यह 70-80 प्रतिशत तक हो सकता है।
- मिनीकॉय द्वीप और राजधानी कावारत्ती भी समुद्री जल स्तर के बढ़ने से प्रभावित हो सकते हैं, और इनके वर्तमान तटरेखा के 60 प्रतिशत के लगभग भूमि हानि होने की संभावना है।

तटीय संरक्षण उपाय

दो प्रकार के तटीय संरक्षण उपाय हैं जिन्हें सरकार अपना सकती है

a. हल्के उपाय अर्थात, मैनग्रोव का सृजन, जिसे हम ज्यादा प्रभावी मानते हैं।
b. सख्त इंजीनियरिंग हल जिसमें समुद्री दीवारों का निर्माण शामिल है- यह काफी खर्चीला काम है।

लक्षद्वीप के बारे में जानकारी

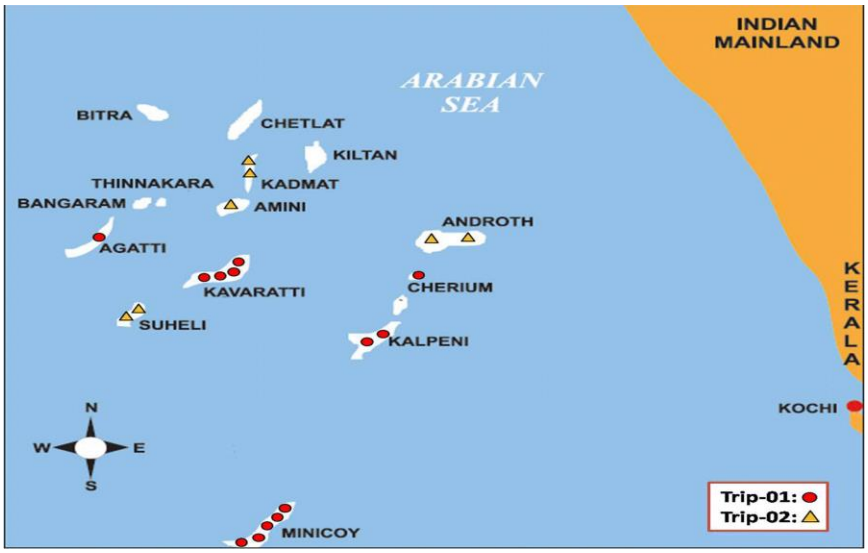

- लक्षद्वीप द्वीपसमूह में अरब सागर में मूंगे और चट्टान निर्माण के 36 द्वीप शामिल हैं, जो कुल 32 वर्ग किमी. में है।
- इन द्वीपों की विशेषता निम्न ऊंचाई है, जिसमें अधिकतम ऊंचाई माध्य समुद्री स्तर से 4-6 मी. तक है और न्यूनतम ऊंचाई 1 मी. से भी कम है।